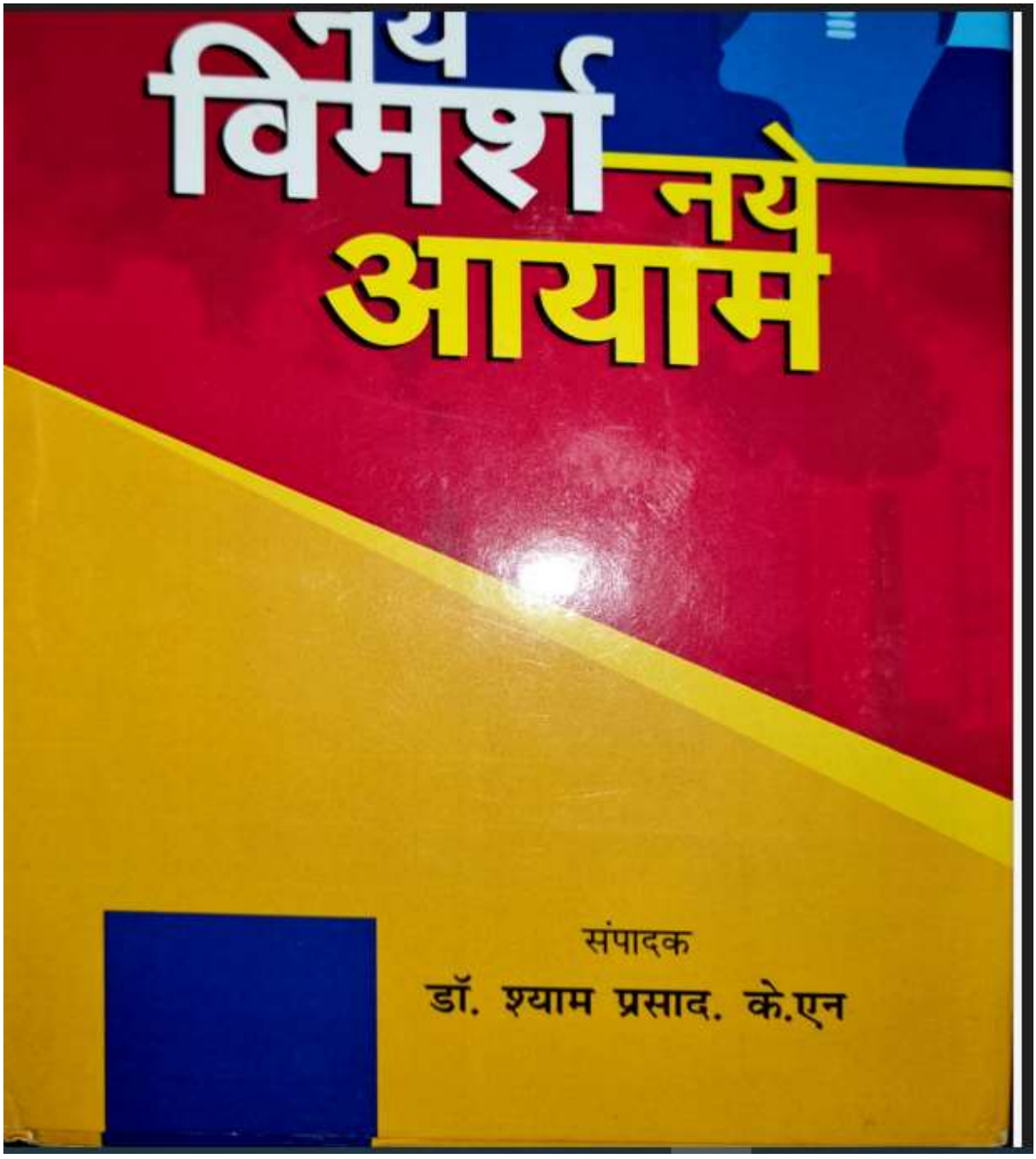
नय विमर्श नये आयाम
संपादक
डॉ. श्याम प्रसाद. के.एन

ISBN : 978-81-948367-0-4

© : सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक : गोविन्द पचौरी
जवाहर पुस्तकालय
हिन्दी पुस्तक प्रकाशक एवं वितरक
सदर बाजार, मथुरा-281001 (उ.प्र.)
दूरभाष : 09897000951
ई-मेल : jawahar.pustakalaya@gmail.com

मूल्य : 450.00 (चार सौ पचास रुपये मात्र)

प्रथम संस्करण : 2020

आवरण : विनीत शर्मा

शब्द-संयोजन : गीता डिजाइनिंग ग्रुप, दिल्ली-110094
मो. : 09350345268

मुद्रक : बालाजी प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

(3)

स्त्री बिमर्श : दशा और दिशा

–डॉ. पूर्णिमा, आ

स्त्री विमर्श एक नारीवादी सिद्धांत है जिसमें स्त्री केन्द्रित चर्चा होती है। विमर्श का शब्दिक अर्थ तथ्यानुसंधान, विवेचन, चिंतन, मनन, गुणदोष की विवेचना और जीवंत बहस है। साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में इसे विचार का पुनर्विचार कहा जा सकता है। किसी भी समस्या को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखना-परखना, वैचारिक प्रतिबद्धताओं के समक्ष उलट-पलटना और समग्रता से समझने की कोशिश विमर्श के अंतर्गत आती है। प्रो. रोहिणी अग्रवाल के अनुसार "स्त्री को केन्द्र में रखकर समाज, संस्कृति, परंपरा एवं इतिहास का पुनरीक्षण करते हुए स्त्री की स्थिति पर मानवीय दृष्टि से विचार करने की अनवरत प्रक्रिया स्त्री विमर्श है।" स्त्री विमर्श के अंतर्गत प्राचीनता-समकालीनता प्रमुख नहीं है, प्रमुखता अतीत, वर्तमान और भविष्य की आन्विति और संगति के परिप्रेक्ष्य में स्त्री समस्या विश्लेषण करने का भाव है। इसीलिए स्त्री विमर्श को चेतना के प्रसार का आख्यान कहा जाता है। स्त्री विमर्श, स्त्री के अधिकारों और हकों को लेकर आगे बढ़ता है। वह पुरुषों का विरोध नहीं करता बल्कि उसकी पशुता की बढ़ती हुई सीमा का विरोध करता है। मृणाल पाण्डे के अनुसार– "नारिवाद पुरुषों का नहीं उनकी मानसिकता बटानेवाले उस छद्म मुखौटे का प्रतिकार करता रहा है जो मर्दानगी के नाम पर गढ़ा गया है और जिसके पीछे झूठी अहम्मान्यता और उत्पीडक प्रकृति के अलावा कुछ नहीं है।"[1] स्त्री 'विमर्श प्रशिक्षण का निवेदित शास्त्र है जो पितृसत्ता के उकसाए पूर्वग्रहों से मुक्ति चाहता है–इनकी और पूरे समाज की[2]

भारतीय समाज में स्त्री की अंतर्विरोधी स्थितियों की अनुगूँज वेद की ऋचाओं से शुरू', होकर समकालीन दौर तक चली आ रही है। वेदकालीन समाज में स्त्रियों का उन्नत स्थान था। वहीं उसे अत्यंत श्रेष्ठ मानकर पूजा